योगदर्शन में योग की प्रकृति

(Nature of Yoga in Yogadarshan)

Dr. Ram Kishore

Assistant Professor (Yoga)

School of Health Sciences

CSJM University, Kanpur

योगदर्शन परिचय

- तत्वमीमांसा : द्वैतावादी
- योग की परिभाषा : समाधि
- समस्त आधारणाओं का आधार : चित्त और उसकी वृत्तियाँ

अर्थ

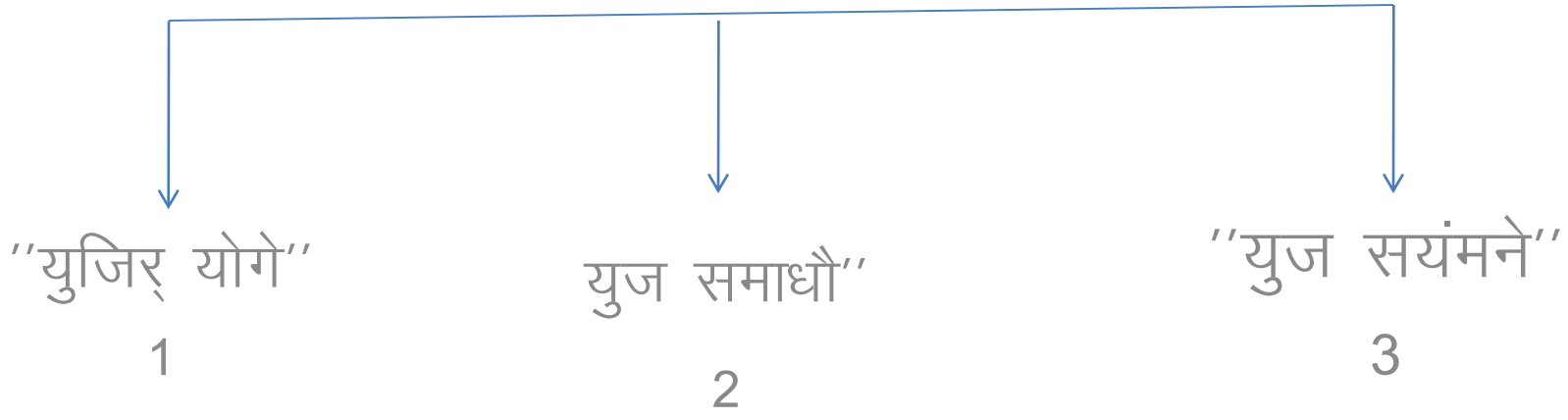

1. योग शब्द की उत्पत्ति तीन धातुओं से हुई है, यथा : 'युजिर् योगे', 'युज समाधौ' और 'युज सयंमने'
2. 'युजिर् योगे', धातु से निष्पन्न योग संयोगार्थक है।
3. 'युज समाधौ' धातु से निष्पन्न 'योग' समाधि के अर्थ में प्रयुक्त होता है।
3. 'युज सयंमने' धातु से निष्पन्न 'योग' शब्द 'सयंम' अर्थ में प्रयुक्त होता है।
4. इस प्रकार योग शब्द संयोग', समाधि और संयम तीन अर्थों में प्रयुक्त होता है।

योग की परिभाषा

योगश्चित्त वृत्ति निरोधः।

योगसूत्र 1.2

चित्त?

अन्तःकरण को ही चित्त कहते हैं।

करण क्या है?

अन्तःकरणं त्रिविधं दशधा बाह्यां त्रयस्य विषयाख्यम्।
साम्प्रतकालं बाह्यं त्रिकालमाभ्यन्तरं करणम्।।

सांख्यकारिका 33

अर्थात् करण के दो भेद अन्तः एवं बाह्य है। इनमें अन्तःकरण के अन्तर्गत मन, बुद्धि, अहंकार तीन तत्व तथा बाह्यकरण के अन्तर्गत पंचतनमात्रा एवं पंचमहाभूत दस तत्व आते हैं।

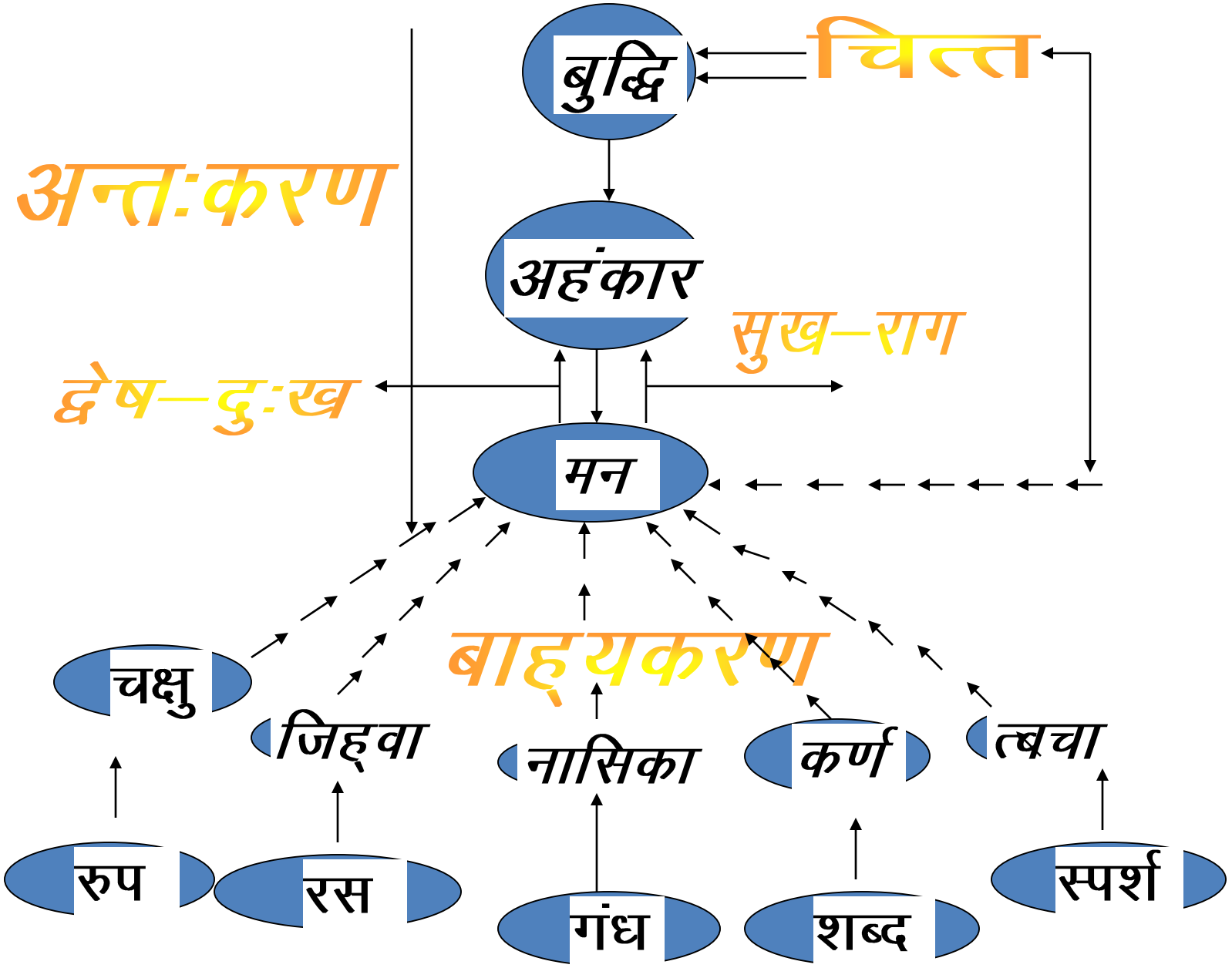
बुद्धि
चित्त
अन्तःकरण
अहंकार
सुख–राग
द्वेष–दुःख
मन
बाह्यकरण
चक्षु
जिह्वा
नासिका
कर्ण
त्वचा
रुप
रस
गंध
शब्द
स्पर्श

वृत्ति?

समस्त प्रकार के ज्ञान वृत्तियाँ कहलाती हैं।

निरोध?

चित्त की वृत्तियों का निरोध – दो स्तरों पर

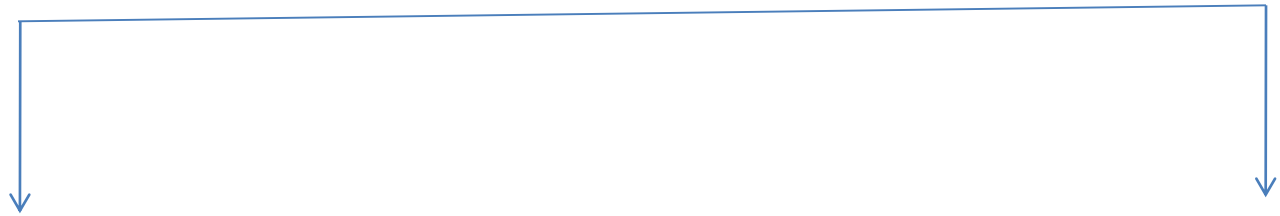

1. क्लिष्ट वृत्तियों का निरोध की अवस्था

द्वारा

अपर वैराग्य

2. क्लिष्ट अक्लिष्ट सभी वृत्तियों के निरोध की अवस्था

द्वारा

परवैराग्य

धन्यवाद

Thanks